© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

आचार्य चाणक्य के राजनैतिक विचार

डॉ. आरती शर्मा
सहायकाचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
नव देहली

शोध आलेख सार– राजा को योग्य सर्वगुण सम्पन्न धर्मपरायण तथा परोपकारी होना चाहिए । इसी आधार पर उन्होने राजा के गुणों और योग्यताओं का वर्णन किया है। आचार्य चाणक्य की दृष्टि में राजा को गुणवान और शीलवान होना चाहिए । उसी व्यक्ति को राजा होना चाहिए जो राज्य के क्षेत्र का मूल निवासी हो, जो शास्त्रों के निर्देशों का पालन करता हो और जो कुलीनवंशज हो, बलवान हो तथा व्याधियों और व्यसनों से मुक्त हो और प्रजापालन में तत्पर हो। दैवीय सिद्धान्त के आधार पर भी आचार्य चाणक्य का विचार है कि राजा की मृत्यु के बाद उसके ज्येष्ठ पुत्र का राज्याभिषेक किया जाए और पुत्र के अभाव में राजकन्या को राजगद्दी पर बैठाना चाहिए ।

मुख्य शब्द– कौटिल्य, चाणक्य, राजकन्या, धर्मपरायण, परोपकारी, शीलवान, कुलीनवंशज|

आचार्य चाणक्य का जन्म तक्षशिला के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका जीवन काल 350-275 ई. पू. माना जाता है। इन्हें कौटिल्य भी कहा जाता है। आचार्य चाणक्य के अर्थशास्त्र के प्रथम अनुवाद पंडित शामाशास्त्री ने कौटिल्य नाम का प्रयोग किया है।

कौटिल्य शब्द की प्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिए विष्णु-पुराण में कहा गया है - **''तान्नरान् कौटिल्यो ब्राह्मणस्समुद्धरिष्यति ।''** डा. गणपति शास्त्री के मतानुसार कुटाला गोत्र में उत्पन्न हुए थे। इसी से उनका नाम कौटिल्य पड़ा । उनके माता-पिता ने नामकरण संस्कार के अवसर पर उन्हें विष्णु गुप्त नाम दिया। एक अन्य प्रचलित धारणा के अनुसार कुषला अन्न से भरे पात्र को कहते हैं। इस पात्र में रखे अन्न पर जो ब्राह्मण निर्भर रहते हैं, उन्हें कुराला कहते थे क्योंकि उनके इस व्यवसाय में थे। अतः उनका आचार्य कौटिल्य नाम पड़ा ।

आचार्य चाणक्य के और भी कई नामों का उल्लेख किया गया है, जिसमें चाणक्य नाम प्रसिद्ध है। चाणक्य नाम को लेकर भी विद्वानों के बीच मतभेद है। कुछ विद्वानों का मत है कि उसका जन्म पंजाब के चणक क्षेत्र में हुआ था, इसलिए उसे चाणक्य कहा गया है। यद्यपि इस संबंध में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता।

एक बात स्पष्ट है कि आचार्य चाणक्य और चाणक्य एक ही व्यक्ति है। इस नामों के अलावा उसके और कई भी नामों का उल्लेख मिलता है जैसे विष्णुगुप्त । कहा जाता है कि उनका मूल नाम विष्णुगुप्त ही है अथवा उनके पिता ने उसका नाम विष्णुगुप्त ही रखा था।

इन नामों के अतिरिक्त उनके और भी कई नामों का उल्लेख किया गया है। आचार्य चाणक्य के पिता का नाम चणक था। वे एक गरीब ब्राह्मण थे और किसी तरह अपना गुजर-बसर करते थे। अतः स्पष्ट है कि आचार्य चाणक्य का बचपन गरीबी और संघर्षो में बीता होगा।

आचार्य चाणक्य की शिक्षा-दीक्षा के संबंध में कहीं कुछ विशेष वर्णन नहीं मिलता है, परन्तु उनकी बुद्धि की प्रखरता और उसकी विद्वता उसके विचारों से परिलक्षित होती है। वह कुरुप होते हुए भी शारीरिक रुप से बलिष्ठ थे। आचार्य चाणक्य के बारे में यह कहा जाता है कि वह बहुत ही स्वाभिमानी एवं क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति थे।

आचार्य चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी वह नंदवंश के साम्राज्य को हटाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। अतः चंद्रगुप्त ने चाणक्य की सहायता से नंदवंश के शासक को उसकी राजगद्दी से हटाकर चंद्रगुप्त मगध के सिंहासन पर बैठा। चाणक्य को प्रधान महामंत्री बनाया गया। धीरे-धीरे पूरे भारत को उन्होनें अपने साम्राज्य का अंग बना लिया। आचार्य चाणक्य की मान्यता थी कि राजा या मंत्री अपने चरित्र और ऊँचे आदर्शों के द्वारा लोगों के

सामने एक प्रतिमान दे सकता है। कहा जाता है कि बाद में आचार्य चाणक्य ने मंत्री के पद को त्यागकर वाणप्रस्थ जीवन व्यतीत किया था। नंदवंश के विनाश तथा मगध साम्राज्य की स्थापना एवं विस्तार में उनका ऐतिहासिक योगदान है । एक प्रकांड विद्वान तथा गंभीर चिंतक के रूप में आचार्य चाणक्य तो विख्यात हैं ही, एक व्यावहारिक एवं चतुर राजनीतिज्ञ के रूप में भी उन्हें ख्याति मिली है।

आचार्य चाणक्य की कितनी कृतियाँ हैं, इस संबंध में कोई निश्चित जानकारी सूचना उपलब्ध नहीं है। आचार्य चाणक्य की सबसे महत्वपूर्ण कृति 'अर्थशास्त्र' का उल्लेख सर्वत्र मिलता है, किन्तु अन्य रचनाओं के संबंध में कुछ विषेष उल्लेख नहीं मिलता है। धातु कौटि कौटिल्या और 'राजनीति' नामक रचनाओं के साथ आचार्य चाणक्य का नाम जोड़ा गय है।

आचार्य चाणक्य का अर्थशास्त्र राजनीतिक सिद्धान्तों की एक महत्वपूर्ण कृति है। 'अर्थशास्त्र' प्राचीन भारतीय चिन्तन की नीति-शास्त्र परम्परा का प्रतिनिध ग्रंथ है। भारतीय चिन्तन परम्परा के अन्य स्त्रोतों यथा स्मृतियों व महाकाव्य आदि से अर्थशास्त्र की भिन्नता इस संबंध में स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र में राजनीतिक ज्ञान, मनुष्य के जीवन के उद्देश्यपूर्ण नियमन तथा मानवीय आचरण के समुचित नियंत्रण के लौकिक उद्देष्यों को स्वतंत्र महत्त्व प्रदान किया गया है।

आचार्य चाणक्य के अनुसार अर्थशास्त्र की विषय वस्तु में व्यक्ति के लौकिक आचरण और उसकी उन्नति के सारे संदभर्भ अनिवार्य रूप से सम्मिलित हैं। उन्होने मानवीय वृत्तियों को अर्थ की संज्ञा दी है, तथा मनुष्यों से युक्त भूमि को भी अर्थ की परिधि में सम्मिलित किया है। इनके अनुसार 'मनुष्यों से बसी हुई इस भूमि को 'अर्थ' कहते हैं। राजशास्त्र वह विद्या है जो भूमि की प्राप्ति, उसकी रक्षा और उसकी उन्नति से संबंध रखती हो।

अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण हैं। प्रत्येक अधिकरण में अनेक अध्याय हैं। अध्यायों की कुल संख्या 150 है। जिनमें अर्थशास्त्र, सैन्यशास्त्र समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, यांत्रिक-विद्या और राजशास्त्र आदि अनेक विषय सम्मिलित हैं। इस ग्रंथ में कुल मिलाकर 6,000 श्लोक हैं। आचार्य चाणक्य का 'अर्थशास्त्र' प्राचीन भारतीय राजनैतिक और प्रशासकीय व्यवस्था को समझने हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

आचार्य चाणक्य ने राज्य की उत्पत्ति की चर्चा करने के क्रम में राजतंत्र को ध्यान में रखा है, कई स्थानों पर आचार्य चाणक्य ने यह संकेत किया है कि राजा ही राज्य है। उसके अनुसार राजा, राज्य की आत्मा है, इसलिए वह राज्य का प्रतिनिधित्व करता है।

शान्तिपर्व में यह उल्लेख विचार मिलता है कि एक ऐसा समय भी था जब राजसंस्था नहीं थी। इसे अराजक दशा कह सकते है। जो वास्तव में मात्स्य न्याय की दशा थी । जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है उसी प्रकार बलवान लोग निर्बल लोगों के लिए कठिनाई उत्पन्न कर देते हैं । अराजक दशा में किसी भी व्यक्ति का जीवन सुरक्षित नहीं था ।

अन्याय से बचने के लिए प्रजा ने मिलकर विवस्वान के पुत्र मनु को अपना राजा बनाया । जनता ने परस्पर यह सहमति भी बनायी कि वे अपने राजा के आदेशों का पालन करेंगे । इसके बदले में राजा अपनी जनता की रक्षा व उनका भरण-पोषण करेंगे। आचार्य चाणक्य ने लिखा है कि ''मात्स्य न्याय से पीड़ित प्रजा ने वैवस्वत मनु को अपना राजा बनाया और अपने धान्य अर्थात् कृषि उपज का छठा अंश तथा स्वर्ण अर्थात् व्यापार और वस्तुओं का दसवाँ भाग राजा को देने की व्यवस्था की।

आचार्य चाणक्य के अर्थशास्त्र में कई प्रकार की शासन व्यवस्थाओं का वर्णन मिलता है, जैसे कि राजतंत्र, द्वैराज्य, पैराज्य, संघराज्य अर्थात् गणराज्य। सभी शासन पद्धतियों के गुण-दोषों का भी वर्णन है ।

राजतंत्र को भी श्रेष्ठ व्यवस्था मानते हुए आचार्य चाणक्य ने कहा है कि राजा को योग्य सर्वगुण सम्पन्न धर्मपरायण तथा परोपकारी होना चाहिए । इसी आधार पर उन्होने राजा के गुणों और योग्यताओं का वर्णन किया है। आचार्य चाणक्य की दृष्टि में राजा को गुणवान और शीलवान होना चाहिए । उसी व्यक्ति को राजा होना चाहिए जो राज्य के क्षेत्र का मूल निवासी हो, जो शास्त्रों के निर्देशों का पालन करता हो और जो कुलीनवंशज हो, बलवान हो तथा व्याधियों और व्यसनों से मुक्त हो और प्रजापालन में तत्पर हो।

दैवीय सिद्धान्त के आधार पर भी आचार्य चाणक्य का विचार है कि राजा की मृत्यु के बाद उसके ज्येष्ठ पुत्र का राज्याभिषेक किया जाए और पुत्र के अभाव में राजकन्या को राजगद्दी पर बैठाना चाहिए । आचार्य चाणक्य के अनुसार राजा, प्रजा से **कर** ग्रहण करके उससे ही प्रजा का कल्याण करता है।

संदर्भ

1. तायल, बी.बी. राजनीतिक सिद्धान्त और चिंतन, सुलतान चंद एंड सन्स नई दिल्ली 2013
2. प्रसाद, मणिशंकर, कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 1998
3. निरंजन, हरिओम शरण, कौटिलीय अर्थशास्त्र, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली 2009
4. अवस्थी एस. एस., अरोडा, एन. डी., राजनीतिक सिद्धान्त एवं राजनीतिक चिंतन, हरआनन्द पब्लिकेशन्स
5. त्यागी, पी.के., भारतीय राजनीतिक विचारक, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2013
6. मिश्रा, डॉ. महेन्द्र कुमार, भारतीय राजनीतिक विचारक, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली 2010
7. गाबा, ओम प्रकाश, राजनीति सिद्धान्त एवं चिंतन के एल. मलिक एंड संस,
8. अवस्थी, डॉ. ए.पी., भारतीय राजनीतिक विचारक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
9. जैन, डा. पुखराज, प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
10. वर्मा, डा. बी.पी., आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा